Music Inst.

B.A Sem IV th

# गुरुमति संगीत में वादन संगीत का महत्व

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब विश्व का एक अद्वितीय धार्मिक ग्रन्थ है। इसमें अंकित वाणी साहित्य व संगीत की अमूल्य निधि है। यह सम्पूर्ण ग्रन्थ गेय रूप में है। गुरु साहिबान तथा अन्य भक्त कवियों की बाणी का संकलन गुरु ग्रन्थ साहिब में राग बद्ध रूप में प्राप्त होता है। गुरमति संगीत में गुरु ग्रन्थ साहिब की बाणी का गायन समूह संगत द्वारा कीर्तन रूप में होता है।

प्रथम गुरु नानक देव (जन्म 1469 ई० ने आध्यात्मक विषयों से भरपूर वाणी की रचना की। इन्होंने करतारपुर को आध्यात्मक प्रचार का केन्द्र स्थान बनाया। आध्यात्मक प्रचार के लिए संगीत को महत्वपूर्ण अंग माना और प्रभु उस्तति के लिए बाणी का गायन किया। प्रात: काल 'आसा दी वार' दी चौकी' की प्रथा आरम्भ की। इसी गुरबाणी को कीर्तन का नाम दिया गया। गुरु नानक देव जी से कीर्तन की इस नवीन प्रथा का प्रचलन हुआ।

गुरु रामदास के समय तक कीर्तन की दो चौकियां 'आसा दी वार की चौकी' तथा सोदर की चौकी' की प्रथा चलती रही। गुरु अर्जुन देव के समय हरिमंदिर